षष्ठ अध्याय

11119CH06

काव्य की अन्य विधाएँ

संस्कृत साहित्य के अंतर्गत बहुत-सी ऐसी पद्य-रचनाएँ हैं, जिन्हें महाकाव्य नहीं कहा जाता, फिर भी काव्य की सामान्य परिभाषा में ये रचनाएँ आती हैं। इन्हें खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, मुक्तक, स्तोत्रकाव्य इत्यादि कहा जाता है। इस अध्याय में महाकाव्य से भिन्न रूप के पद्य-काव्य की विधाओं का क्रमश: विवेचन किया जा रहा है।

खण्डकाव्य

लघु कथानक पर आश्रित काव्य को खण्डकाव्य कहा जाता है। इसे गीतिकाव्य भी कहते हैं, यदि कोमल भावों को कवि अपनी अनुभूति और कल्पना से पूर्ण करके संगीतमयी भाषा में प्रकट करे। संस्कृत भाषा में *ऋतुसंहार* तथा *मेघदूत* उत्कृष्ट खण्डकाव्य हैं।

ऋतुसंहार

यह कालिदास की रचना है। इसमें छ: सर्गों में ग्रीष्म आदि ऋतुओं का काव्यमय वर्णन है। इन ऋतुओं के वर्णन में कालिदास ने शृङ्गार भावना को प्रमुखता दी है। इसलिए सर्वत्र नायक-नायिका के संवाद के रूप में ऋतुओं को उपस्थित किया है। ऋतु परिवर्तन से जहाँ बाह्य प्रकृति में नवीनता आती है, वहाँ युवक-युवतियों में विविध प्रणय-क्रीड़ाओं तथा शृङ्गार की चेष्टाओं का उदय दिखाया गया है। वसन्त का वर्णन करते हुए कवि कहता है—

द्रुमा: सपुष्पा: सलिलं सपद्मं
स्त्रिय: सकामा: पवन: सुगन्धि:।
सुखा: प्रदोषा दिवसाश्च रम्या:
सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते।।

प्रिये! जिधर देखो आनन्द ही आनन्द है। वसन्त के आते ही वृक्ष फलों से लद गए हैं। जल में कमल खिल गए हैं। स्त्रियाँ प्रियों से मिलने के लिए उत्सुक हो गई हैं। पवन सुगन्धपूर्ण हो गया है। संध्या सुहावनी हो गई है। दिन आकर्षक लगते हैं। सचमुच वसन्त में सब कुछ अधिक सुन्दर हो गया है।

© NCERT not to be republished

ऋतुसंहार कालिदास की युवावस्था की रचना कही जाती है। उनके उत्कृष्ट काव्य-गुणों के अंकुर इसमें दिखाई पड़ते हैं। रूपक और उपमा जैसे अलंकारों का प्रयोग एक तरुण कवि के रूप में कालिदास ने यहाँ किया है।

मेघदूत

महाकवि कालिदास की यह रचना यद्यपि केवल 120 श्लोकों की है, तथापि इसने इन्हें अपूर्व ख्याति दी है। *मेघदूत* प्रबन्धात्मक खण्डकाव्य है। इसमें एक ऐसे यक्ष की विरह-व्यथा का वर्णन है, जो एक वर्ष के लिए अपनी प्रिय पत्नी से दूर कर दिया जाता है। उसकी पत्नी हिमालय में स्थित अलकापुरी में यक्षों की नगरी में रहती है। यक्ष स्वयं (मध्य भारत में स्थित) रामगिरि में प्रवास कर रहा है। वर्षाकाल के आरम्भ में वह मेघ को दूत बनाकर अपना सन्देश प्रियतमा के पास भेजता है।

मेघदूत में दो भाग हैं— *पूर्वमेघ* और *उत्तरमेघ*। *पूर्वमेघ* में रामगिरि से अलकापुरी तक मेघ के मार्ग का रोचक वर्णन है। भारतवर्ष के प्राकृतिक सौंदर्य का सुन्दर चित्र कालिदास ने इसमें खींचा है। उज्जयिनी का वर्णन अपेक्षाकृत विस्तार से किया गया है। *उत्तरमेघ* में अलकापुरी के वर्णन के प्रसंग में यक्ष के भवन तथा उसकी विरहिणी प्रियतमा का चित्र अंकित किया गया है। उसे मार्मिक संदेश भी दिया गया है। यक्ष मेघ को एक चेतन संदेशवाहक मानता हुआ भी उसके स्वाभाविक गुणों से अवगत है। इसलिए वह कहता है— तुमसे प्रार्थना है कि जब तुम मेरी प्रिया के निवास-स्थान पर पहुँचो, तो बिजली को जोर से चमकने न देना। मेरी पत्नी कहीं स्वप्न देख रही होगी या मेरा ध्यान कर रही होगी, तो तुम्हारा गर्जन सुनकर जाग जाएगी।

मेघदूत में विरह और प्रणय का अद्भुत चित्र खींचा गया है। पूरे काव्य में मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग हुआ है। कालिदास ने इसमें आभ्यन्तर और बाह्य दोनों प्रकृतियों का सुरम्य समन्वय किया है। *मेघदूत* के आधार पर संस्कृत में दूत-काव्यों की परम्परा चल पड़ी। विभिन्न कवियों ने विभिन्न शताब्दियों में अनेक संदेश-काव्य लिखे, जैसे— जम्बू कवि का *चन्द्रदूत*, धोयी कवि का *पवनदूत*, वेंकटनाथ, रूपगोस्वामी, वामनभट्ट बाण के पृथक्-पृथक *हंसदूत* इत्यादि। शताधिक दूतकाव्य *मेघदूत* के अनुकरण पर लिखे गए हैं।

गीतिकाव्य

भावानामात्मनिष्ठानां कल्पना वलितं लघु।
स्फुरणं गेयरूपेण गीतिकाव्यं निगद्यते।।

Reprint 2026-27

हृदय में स्थित भावों और कल्पनाओं को गेय रूप में प्रकट करने वाले काव्य को गीतिकाव्य कहा जाता है।

संस्कृत में गीतिकाव्यों की समृद्ध परंपरा है। *ऋग्वेद* में स्तुतिपरक मन्त्रों के माध्यम से सर्वप्रथम गीतियाँ लिखी गई थीं, जिनमें ऋषियों ने अपने कोमल भावों को प्रकट किया था। *ऋग्वेद* के अन्य सूक्तों में भी हमें सुख और दु:ख को प्रकट करने वाले गीत मिलते हैं, जिनमें हिरण्यगर्भ आदि ऋषियों ने व्यक्तिगत अनुभवों को निश्छल भाव से प्रकट किया है। गीतिकाव्य गीतों को लोग अवकाश के समय में या विशिष्ट अवसरों पर गाते हैं। इनमें भक्ति या शृङ्गार से सम्बद्ध गीत होते हैं। इनकी रचना ऐसे छन्दों में होती है, जिन्हें सरलता से गाया जा सके। सभी लोग इन गीतों को सुनकर भावविभोर हो उठते हैं। गीतिकाव्य का क्षेत्र बहुत व्यापक है। इसमें शृंगार और भक्ति से सम्बद्ध प्रबन्धात्मक और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्य आते हैं। सभी स्तोत्रकाव्य गेय होने से गीतिकाव्य की श्रेणी में आते हैं। मुक्तककाव्यों में गेयता पायी जाने के कारण उन्हें भी विद्वानों ने गीतिकाव्य की श्रेणी में रखा है।

गीतगोविन्द

यह जयदेव रचित एक अत्यन्त लोकप्रिय गीतिकाव्य है। जयदेव, बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन की राजसभा में रहते थे। ये कृष्णभक्त कवि थे। इस काव्य में राधा-कृष्ण के प्रेम का वर्णन है। इसमें 12 सर्ग हैं, जिनमें राधा-कृष्ण की प्रेम-लीला की झाँकियाँ गीतों के द्वारा प्रकट की गई हैं। इसके प्रत्येक अक्षर में संगीत है। यह मधुर, कोमल-कान्त पदावली का है। उदाहरण के लिए—

ललितलवङ्गलता-परिशीलन-कोमलमलयसमीरे।
मधुकरनिकरकरम्बित-कोकिल-कूजितकुञ्जकुटीरे।।

यहाँ लम्बा समास होने पर भी शैली में मनोरमता और प्रवाह विद्यमान है।

इसके प्रत्येक गीत के राग और ताल का निरूपण किया गया है। पूर्वी भारत में इसकी गान यात्रा (उत्सव-विशेष) आदि विविध अवसरों पर किया जाता है। संस्कृत के गीतिकाव्यों में यह श्रेष्ठ है।

चौरपञ्चाशिका

यह 50 श्लोकों का गीतिकाव्य है, जिसमें किसी राजकुमारी से कवि के गुप्त प्रेम का वर्णन है। इस प्रेम-प्रसंग का पता जब राजा को चलता है, तब वह कवि को प्राणदण्ड का आदेश

© NCERT not to be republished
Reprint 2026-27

देता है। जब कवि दण्ड के लिए ले जाया जा रहा था, तब उसने राजकुमारी के साथ बिताए सुख की स्मृति में 50 श्लोक पढ़े। इन्हें सुनकर राजा अभिभूत हो गया और उसने कवि को राजकुमारी से विवाह करने की अनुमति दे दी। इस काव्य के विषय में उपर्युक्त कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि कवि का नाम चौर था, जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है। कतिपय विद्वानों के मतानुसार इसके रचयिता कवि बिल्हण थे। इस काव्य के सभी श्लोक वसन्ततिलका छन्द में हैं तथा 'अद्यापि' से इन श्लोकों का आरम्भ होता है, जैसे—

अद्यापि तां भुजलतार्पितकण्ठपाशां
वक्ष:स्थलं मम पिधाय पयोधराभ्याम्।
ईषन्निमीलित-सलीलविलोचनान्तं,
पश्यामि मुग्धवदनां वदनं पिबन्तीम्॥

मुक्तककाव्य

मुक्तककाव्य भी गीतिकाव्य की श्रेणी में आते हैं। इनका प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र होता है, प्रबन्धात्मक नहीं। प्राचीन काव्यशास्त्री मुक्तकों को उत्कृष्ट काव्य नहीं मानते थे, किन्तु आनन्दवर्धन ने मुक्तकों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। मुक्तकों में प्रत्येक श्लोक चमत्कारपूर्ण होता है। विभिन्न युगों में कई प्रकार के मुक्तक काव्य संस्कृत भाषा में लिखे गए।

भर्तृहरि का शतकत्रय

भर्तृहरि का समय सातवीं शताब्दी ई. माना जाता है। इन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर प्राय: सौ-सौ श्लोकों के तीन संग्रह बनाए— *शृङ्गारशतक*, *नीतिशतक* और *वैराग्यशतक*। इनमें प्रत्येक श्लोक अपने में परिपूर्ण है। *शृङ्गारशतक* में काम और विलास की नाना स्थितियों, स्त्रियों के हाव-भाव, कटाक्ष आदि का सुन्दर वर्णन किया गया है। काम के महत्त्व की घोषणा करते हुए कवि कहता है कि नारी का प्रत्येक कर्म मोहक होता है। बहुत कम लोग काम के दर्प को चूर करने में समर्थ होते हैं— **कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्या:।**

नीतिशतक में कवि ने विद्या, वीरता, सज्जनता आदि उदार वृत्तियों का वर्णन करते हुए मूर्खता, लोभ, धन, दुर्जनता आदि की निन्दा भी की है। इसके श्लोक जन-समाज में बहुत प्रचलित हैं। इसमें प्रचुर स्वाभाविकता है।

वैराग्यशतक में कवि ने संसार की असारता और वैराग्य की महत्ता का प्रतिपादन किया है। इसमें काव्य-प्रतिभा और दार्शनिकता का अपूर्व समन्वय है। भर्तृहरि संस्कृत में मुक्तक गीतिकाव्य की परम्परा के प्रवर्तक कवि हैं। भाषा की सरलता के कारण इनके

Reprint 2026-27

भाव पाठकों पर सीधा प्रभाव डालते हैं। अनेक छन्दों में विषय को रोचक बनाकर अनुरूप उदाहरण देकर सूक्तियों से भर्तृहरि श्रोता को तत्काल आकृष्ट कर लेते हैं।

अमरुशतक

संस्कृत गीतिकाव्यों में अमरुशतक अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। यद्यपि यह शतक है, किन्तु इसमें प्राय: 150 श्लोक मिलते हैं। निश्चय ही अमरु कवि के श्लोकों में दूसरे कवियों ने भी अपने श्लोक मिलाए होंगे। *अमरुशतक* का सर्वप्रथम उल्लेख आनन्दवर्धन (850 ई.) ने किया। वे कहते हैं कि अमरु का प्रत्येक श्लोक भावों की उत्कृष्टता के कारण अपने में ही पूर्ण काव्य है। यह शृङ्गारपूर्ण श्लोकों का संग्रह है। शृंङ्गार के सभी पक्ष इसमें चित्रित हैं। कहीं मानवती नायिका के अनुराग का चित्र है, तो कहीं प्रियतम के लौटने पर उसके क्रोध के दूर होने का वर्णन है। समासों का अभाव और शब्दों का सुपरिचित होना इसके आकर्षण का सबसे बड़ा कारण है। अमरु कवि प्रेम के श्रेष्ठ चित्रकार हैं। इनका प्रिय छन्द शार्दूलविक्रीडित है। अमरु कवि का व्यक्तित्व या समय भले ही अज्ञात हो, किन्तु उनकी काव्य-रचना अमर है।

भामिनीविलास

सत्रहवीं शताब्दी के कवि पण्डितराज जगन्नाथ ने अनेक रमणीय श्लोकों का संग्रह अपने *भामिनीविलास* में किया। इसमें गीत्यात्मक मुक्तक पद्यों के चार खण्ड हैं। पदलालित्य तथा अनुप्रासों के विन्यास में जगन्नाथ अद्वितीय हैं। उन्होंने *गङ्गालहरी, सुधालहरी* आदि छोटे स्तोत्रकाव्यों की भी रचना की। उनके अतिरिक्त पण्डितराज ने काव्यशास्त्र का महान् ग्रन्थ *रसगङ्गाधर* भी लिखा।

स्तोत्रकाव्य

भक्तिप्रधान गीतिकाव्यों को स्तोत्रकाव्य कहा जाता है। विभिन्न देवताओं, आचार्यों या तीर्थों की स्तुति में ये स्तोत्र लिखे गए हैं। इनका सस्वर पाठ भक्तों के हृदय में आह्लाद उत्पन्न करता है। भारतवर्ष में विभिन्न सम्प्रदायों के कवियों ने अपने-अपने सम्प्रदायों से सम्बद्ध स्तोत्रों की रचना की। इनमें भक्त कवियों के भाव व्यक्त हुए हैं। पुष्पदन्त नामक कवि ने *शिखरिणी* छन्द में *शिवमहिम्न:* स्तोत्र लिखा था। मयूरकवि ने सूर्य की स्तुति स्रग्धरा छन्द में अपने *सूर्यशतक* नामक काव्य में की, जिसमें अनुप्रासों की छटा अत्यन्त आकर्षक है। बाणभट्ट ने सूर्यशतक के अनुकरण पर *चण्डीशतक* नामक काव्य की रचना की। बाण और मयूर दोनों का समय सातवीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध है।

Reprint 2026-27

शंकराचार्य आदि ने भी अनेक स्तोत्र लिखे, जिनमें *भजगोविन्दम्* और *सौन्दर्यलहरी* विख्यात हैं। कश्मीर में उत्पलाचार्य की *शिवस्तोत्रावली*, धर्माचार्य की *पञ्चस्तवी* तथा अभिनवगुप्त का *अनुभवनिवेदन* व *क्रमस्तोत्र* प्रसिद्ध हैं। जैन और बौद्ध कवियों ने भी अपने आचार्यों तथा गुरुओं की प्रशंसा में शताधिक स्तोत्र लिखे।

प्राकृत काव्य

संस्कृत गीतिकाव्यों के साथ प्राकृत गीतिकाव्य का भी विकास हुआ। इसमें हाल नामक कवि की *गाहासत्तसई* या *गाथासप्तशती* बहुत प्रसिद्ध है। इसका रचनाकाल निश्चित नहीं है, किन्तु जिस प्रकार की प्राकृत भाषा इसमें प्रयुक्त हुई है, वह 200 ई. में प्रचलित थी। *गाथासप्तशती* में प्रदर्शित जीवन संस्कृत काव्य में सामान्यतया प्रदर्शित जीवन से भिन्न है। इसमें ग्रामीण जीवन, कृषक, गोपालक, उद्यान में खेलने वाली कन्याएँ आदि चित्रित हैं। ग्रामीण स्त्रियों का स्वाभाविक वर्णन इसमें किया गया है। इसमें सात सौ प्राकृत गाथाएँ (पद्य) हैं।

गाथासप्तशती के अनुकरण पर जयदेव के समकालिक गोवर्धनाचार्य ने *आर्यासप्तशती* की रचना की जो संस्कृत भाषा में 700 मुक्तक रूप में लिखे गए आर्या छन्द के श्लोकों का संग्रह है। हिन्दी में कवि बिहारी ने भी इन्हीं सप्तशतियों के अनुकरण पर अपनी सतसई की रचना की थी। इस प्रकार छोटे छन्द में शृङ्गार का पूरा चित्र खींचने का प्रयास जो हाल कवि ने किया, उसकी लम्बी परम्परा चली।

अन्य काव्यग्रन्थ

संस्कृत भाषा में कुछ अन्य प्रकार की पद्यात्मक रचनाएँ मिलती हैं, जिन्हें गीतिकाव्य, नीतिकाव्य तथा उपदेशपरक काव्यों में रखा जाता है। इनमें कालिदास के नाम से प्रसिद्ध शृङ्गारतिलक तेईस श्लोकों का काव्य है, जो प्रेम के रमणीय चित्रों से भरा है। इसमें अमरु कवि के भाव झलकते हैं। दूसरा काव्य *घटकर्परकाव्य* है, जो 22 श्लोकों में यमक के प्रयोगों से भरा है। इसलिए इसे यमककाव्य भी कहते हैं।

संस्कृत भाषा में नैतिक सूक्तियों के कई संग्रह मिलते हैं। दामोदर भट्ट (800 ई.) ने *कुट्टनीमत* नामक व्यंग्य ग्रन्थ लिखा, जिसमें पाठकों को सांसारिक नीति के विषय में शिक्षा दी गई है। क्षेमेन्द्र ने समयमातृका, *नर्ममाला, कलाविलास, दर्पदलन, सेव्यसेवकोपदेश, चतुर्वर्ग-संग्रह* इत्यादि ग्रन्थों में हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली में समकालिक जीवन का चित्र

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27

खींचा है। वैद्य, स्वर्णकार, ज्योतिषी, औषधि विक्रेता आदि पर उन्होंने अच्छी चुटकी ली है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा में अनेक प्रकार की पद्य रचनाएँ प्राप्त होती हैं, जो पाठकों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों को प्राप्त करने में सहायता देती हैं। इनका अनुशीलन आज भी आनन्ददायक तथा शिक्षाप्रद है।

श्लेषकाव्य

शिलष्ट काव्य या अनेकार्थक काव्यों की एक परम्परा ग्यारहवीं शताब्दी से चली आ रही है। इनमें शिलष्ट पदावली के प्रयोग से एक ही काव्य में दो या अधिक कथाएँ एक साथ चलती हैं। इस प्रकार के काव्यों में सन्ध्याकरनन्दी का *रामचरित*, धनञ्जय का *राघवपाण्डवीय* प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसे कुछ अन्य प्रमुख काव्य हैं— विद्यामाधव (बारहवीं शताब्दी) कृत *पार्वतीरुक्मिणीय*, माधवभट्ट (बारहवीं शताब्दी) कृत *राघवपाण्डवीय,* दैवज्ञसूर्य (सोलहवीं शताब्दी) कृत *रामकृष्णविलोमकाव्य,* हरदत्तसूरि (सोलहवीं शताब्दी) कृत *राघवनैषधीय,* चिदम्बर कवि (सत्रहवीं शताब्दी) कृत *राघवपाण्डवयादवीय* एवं वेंकटाध्वरी (सत्रहवीं शताब्दी) कृत *यादवराघवीय*।

संस्कृत साहित्य में आरम्भ काल से ही कवयित्रियों का उल्लेख प्राप्त होता है। *ऋग्वेद* में ऋषिकाओं के अनेक मन्त्र संगृहीत हैं, जो काव्य की दृष्टि से अत्यन्त उच्च कोटि के हैं। लौकिक संस्कृत में भी अनेक कवयित्रियों के पद्य सुभाषित सङ्ग्रहों में मिलते हैं। इनमें विज्जका, सुभद्रा, फल्गुहस्तिनी, इन्दुलेखा, मारुला, विकटनितम्बा, शीलाभट्टारिका के नाम प्रमुख हैं। कवयित्रियों ने मुक्तक तथा प्रबन्धात्मक दोनों प्रकार की रचनाएँ की हैं। इनमें रामभद्राम्बाविरचित *रघुनाथाभ्युदय*, तिरुमलाम्बा कृत *वरदाम्बिकापरिणयचम्पू* एवं गङ्गदेवी कृत *वीरकम्परायचरित* तथा *मधुराविजय* प्रसिद्ध प्रबन्धकाव्य हैं। बीसवीं शताब्दी में *पण्डिता क्षमाराव* का नाम उल्लेखनीय है

Reprint 2026-27

ध्यातव्य बिन्दु

- संस्कृत साहित्य में महाकाव्य के अतिरिक्त अन्य रचनाएँ भी हैं, जैसे— खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, मुक्तककाव्य आदि

  खण्डकाव्य—छोटे कथानक वाले काव्य को खण्डकाव्य कहा जाता है। संस्कृत के प्रमुख खण्डकाव्य हैं—*ऋतुसंहार* और *मेघदूत*।

  - **ऋतुसंहार**—कालिदास द्वारा रचित *ऋतुसंहार* में ऋतुओं का काव्यमय तथा शृंगारपूर्ण वर्णन किया गया है।
  - **मेघदूत**—कालिदास द्वारा रचित *मेघदूत* के दो भाग हैं—*पूर्वमेघ* तथा *उत्तरमेघ*। इसमें यक्ष की विरह-व्यथा का वर्णन है।

  गीतिकाव्य—गीतिकाव्यों में विरह, भक्ति तथा शृंगार सम्बन्धी गीत हैं। कुछ प्रमुख गीतिकाव्य इस प्रकार हैं—

  - गीतगोविन्द—जयदेव द्वारा रचित *गीतगोविन्द* में राधाकृष्ण की प्रेमलीला का वर्णन है।
  - चौरपञ्चाशिका—बिल्हण द्वारा रचित *चौरपञ्चाशिका* गीतिकाव्य में राजकुमारी से कवि के गुप्त प्रेम का वर्णन है।

  मुक्तककाव्य—मुक्तककाव्य का प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र तथा चमत्कारी होता है। भर्तृहरि के शतकत्रय—भर्तृहरि ने तीन शतक लिखे—*नीतिशतक, शृंगारशतक* तथा *वैराग्यशतक*।

  - नीतिशतक— विद्या, उदारता, वीरता तथा सज्जनता की वृत्तियों का वर्णन।
  - *शृंगारशतक*— काम और विलास की नाना स्थितियों का वर्णन
  - वैराग्यशतक— संसार की असारता और वैराग्य का वर्णन।

- अमरुकशतक— यह अमरु कवि विरचित गीतिकाव्यों में सबसे प्रसिद्ध है।

Reprint 2026-27

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. महाकाव्य के अतिरिक्त पद्य रचनाएँ काव्य की किन विधाओं में आती है?

प्र. 2. खण्डकाव्य किसे कहते हैं? दो खण्डकाव्यों के नाम लिखिए।

प्र. 3. *मेघदूत* के रचयिता कौन हैं? यह ग्रन्थ कितने भागों में विभक्त है?

प्र. 4. *मेघदूत* में किस छन्द का प्रयोग हुआ है?

प्र. 5. संस्कृत भाषा में *मेघदूत* के अनुकरण पर कैसे काव्यों की परम्परा चल पड़ी? उनमें से तीन के नाम लिखिए।

प्र. 6. गीतिकाव्य किसे कहते हैं? इसमें किस प्रकार के गीत होते हैं?

प्र. 7. *गीतगोविन्द* के रचयिता कौन थे? उनका स्थितिकाल क्या था?

प्र. 8. *चौरपञ्चाशिका* के लेखक कौन हैं? यह किस प्रकार का काव्य है?

प्र. 9. मुक्तक काव्यों की क्या विशेषता है?

प्र. 10. भर्तृहरि ने कितने शतकों की रचना की? उनके नाम लिखिए।

प्र. 11. *नीतिशतक* में कवि ने किन बातों का वर्णन किया है?

प्र. 12. *वैराग्यशतक* में किन भावों का समावेश किया गया है?

प्र. 13. *अमरुशतक* का उल्लेख सर्वप्रथम किसने किया है और कब?

प्र. 14. *अमरुशतक* में कितने श्लोक मिलते हैं?

प्र. 15. पण्डितराज जगन्नाथ के श्लोकों का संग्रह किस ग्रन्थ में हुआ है?

प्र. 16. स्तोत्रकाव्य काव्य की किस श्रेणी में आते हैं?

प्र. 17. शंकराचार्य के प्रसिद्ध स्तोत्र का नाम लिखिए।

प्र. 18. *गाथासप्तशती* किस भाषा में रचित है? इसके रचयिता का नाम भी लिखिए।

प्र. 19. *गाथासप्तशती* में किन बातों का वर्णन हुआ?

प्र. 20. *आर्यासप्तशती* के लेखक कौन हैं? इसकी रचना किस भाषा में हुई है?

प्र. 21. नीतिकाव्यों के नाम लिखिए और उनके लेखकों के नाम भी दीजिए।

प्र. 22. दो श्लेषकाव्यों तथा उनके लेखकों के नाम लिखिए।

Reprint 2026-27

© NCERT not to be republished

प्र. 23. एक प्राचीन तथा एक आधुनिक कवयित्री का नाम दीजिए।

प्र. 24. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) भर्तृहरि.. शताब्दी में हुए थे।

(ख) सर्वं प्रिये... वसन्ते।

(ग) यक्ष स्वयं... में प्रवास कर रहा था।

(घ) गीतिकाव्य का क्षेत्र बहुत... है।

(ङ) वैद्य, स्वर्णकार, ज्योतिषी, औषधि-विक्रेता पर......................ने अच्छी चुटकी ली है।

© NCERT not to be republished

Reprint 2026-27